



आत्म और व्यक्तित्व



टिप्पणी

ग्यारहवीं कक्षा का छात्र राम एक छात्रावास में रहता था। उसके पिता का फोन आया कि तुरंत घर आ जाओ। उसका घर पास के शहर में ही था। उसके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे इसलिए वह सोच रहा था कि क्या करे! उसके रूममेट ने उससे पूछा कि समस्या क्या है? जब राम ने उसे स्थिति बताई तो उसने तुरंत अपनी जेब से कुछ पैसे निकाले और दूसरे दोस्त से बात की। उसने पर्याप्त धन की व्यवस्था की और राम को अपने घर जाने के लिए कहा। राम ने उसे धन्यवाद दिया और वापस लौटने पर पैसे वापस करने का वादा किया।

हम अक्सर खुद को ऐसी स्थितियों में पाते हैं जहां हमें विकल्प चुनने और निर्णय लेने की आवश्यकता होती है और हम हैरान होते हैं कि “मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं यह कर सकता हूँ? मैं आश्वस्त क्यों नहीं हूँ? मैं इतनी सारी गलतियां क्यों करता हूँ? मेरे पास एक प्रभावशाली व्यक्तित्व नहीं है।” जब भी हमें कठिन परिस्थितियों से निपटना होता है तो ऐसे कई सवाल और शंकाएं हमारे मन में उठ खड़ी होती हैं। हममें से कुछ लोग ऐसी स्थितियों से आसानी से निपट सकते हैं। कुछ तो सोचते तक नहीं और जो करना होता है वह कर देते हैं। बाद में सोचते हैं कि मैंने ऐसा क्यों किया? अब मैं मुसीबत में पड़ गया! इस तरह के विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को मनोवैज्ञानिकों द्वारा दो अवधारणाओं, व्यक्तित्व और स्वयं की सहायता से समझाया गया है। इस स्व का क्या अर्थ है, और यह हमें विभिन्न परिस्थितियों में कार्य करने के लिए कैसे प्रेरित करता है? स्वयं का व्यक्तित्व से क्या संबंध है और यह किसी व्यक्ति के व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है? हम एक प्रभावी व्यक्तित्व या एक मजबूत व्यक्तित्व कैसे विकसित कर सकते हैं? इस पाठ में हम स्वयं और व्यक्तित्व के बारे में जानेंगे और यह किस प्रकार हमारे व्यवहार को विकसित और नियंत्रित करता है। हम व्यक्तित्व के कुछ सिद्धांत और व्यक्तित्व का आकलन करने की तकनीक भी सीखेंगे।

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी



अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी:

- स्वयं, आत्म-अवधारणा, आत्म-सम्मान और आत्म-प्रभावकारिता को परिभाषित करते हैं;
- व्यक्तित्व के अर्थ का वर्णन करते हैं;
- व्यक्तित्व के प्रकार और लक्षण, मनोविश्लेषणात्मक और मानवतावादी सिद्धांतों पर चर्चा करते हैं;
- आत्म रिपोर्ट के उपायों और प्रक्षेपी तकनीकों (शब्द साहचर्य परीक्षण और विषय आत्मबोधन परीक्षण) की व्याख्या करते हैं;
- विभिन्न सन्दर्भों में स्वयं के प्रति जागरूक करते हैं; और
- व्यक्तित्व का आकलन करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं।

17.1 स्वयं की अवधारणा

हम स्वयं का कई तरह से वर्णन करते हैं जैसे, 'मैं लम्बा हूँ' या 'मैं तेजी से सीख सकता हूँ' या 'मैं मजबूत हूँ' आदि। खुद का वर्णन करने के ऐसे कई तरीके हैं। ये सभी विवरण मिलकर हमारे 'स्व' को परिभाषित करते हैं। हम अन्य लोगों के तथा भौतिक और सामाजिक परिवेश के साथ व्यवहार के बाद अपने स्वयं के बारे में समझ पैदा करते हैं। इन अंतःक्रियाओं और दूसरों की प्रतिक्रिया के आधार पर, हम अपने बारे में राय बनाते हैं। हम अपने आपको शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लक्षणों के साथ-साथ अपने से जुड़े संगठनों और रिश्तों के संदर्भ में कई तरह से परिभाषित करते हैं।

एक छोटे बच्चे के पास स्वयं की कोई अवधारणा नहीं होती। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, परिवार के भीतर और बाहर के भौतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के साथ उसके अनुभवों और अंतःक्रियाओं से उसके स्वयं का विकास होता है। शुरुआत में, स्वयं का वर्णन करना सरल होता है जैसे 'यह मेरा हाथ है' यह मेरी मां है, या 'मेरा परिवार' या इस प्रकार के वर्णन में हमारी शारीरिक विशेषताएं शामिल हो सकती हैं। धीरे-धीरे, जैसे कोई स्कूल जाता है, और दोस्तों के साथ घुलता-मिलता है, तो कई आत्म-विवरण जमा हो जाते हैं। ये सभी आत्म-वर्णन विकास के विभिन्न क्षेत्रों जैसे शारीरिक, शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक क्षेत्रों के इर्द-गिर्द से ये उभरते हैं। जुड़े हुए हैं और यदि किसी एक ज्ञानक्षेत्र का विवरण हिल जाता है तो अन्य भी कमजोर हो जाते हैं। हालाँकि, अन्य परिधीय अवधारणाएँ

इतनी महत्वपूर्ण नहीं हो सकती हैं। आत्म-अवधारणा उन मूल अवधारणाओं द्वारा गठित होती है। यदि मूल अवधारणाओं को चुनौती दी जाती है तो व्यक्ति परेशान हो जाता है। यदि आप परिधीय अवधारणाओं को चुनौती देते हैं, तो इससे भावनात्मक खतरा पैदा नहीं होता।

अब आप जानते हैं कि कुछ लोग कुछ टिप्पणियों पर इतनी दृढ़ता से प्रतिक्रिया क्यों करते हैं। उदाहरण के लिए, यह तथ्य कि आप अमुक के बेटे या बेटी हैं या आपका धर्म, आपकी उम्र, आदि, मूल अवधारणाएँ हैं। आपको अपनी पोशाकों के लिए जो रंग पसंद है या जो खेल आप खेलते हैं या जिस राजनीतिक दल का आप समर्थन करते हैं, ये सभी परिधीय आत्म-वर्णन हो सकते हैं।

मूल अवधारणाओं द्वारा गठित आत्म-अवधारणा तटस्थ नहीं होती। यह या तो सकारात्मक है या नकारात्मक। तदनुसार, व्यक्ति अपने बारे में सकारात्मक या नकारात्मक सोचते हैं। उदाहरण के लिए, नकारात्मक शारीरिक आत्म-अवधारणा वाला बच्चा यह उम्मीद नहीं कर सकता है कि लोग उसे पसंद करेंगे और तदनुसार सामाजिक परिस्थितियों में आत्मविश्वास से व्यवहार नहीं करता। इसके परिणामस्वरूप लोग उस पर ध्यान नहीं देते हैं, जिससे उसकी आत्म-अवधारणा और मजबूत होती है। इस प्रकार, सकारात्मक या नकारात्मक आत्म-अवधारणा को बदलना आसान नहीं है। व्यक्ति स्वयं के सभी पहलुओं के बारे में सकारात्मक या नकारात्मक रूप में नहीं सोच सकता। नकारात्मक शारीरिक आत्म-अवधारणा वाले व्यक्ति के पास सकारात्मक शैक्षणिक आत्म-अवधारणा हो सकती है। साथ ही, सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले सभी व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते हैं। कुछ के पास कुछ क्षेत्रों में उच्च स्तर की सकारात्मकता हो सकती है, जबकि अन्य के पास कुछ अन्य क्षेत्रों में सकारात्मक आत्म-अवधारणाएँ हो सकती हैं।

17.1.1 वास्तविक-स्व बनाम आदर्श-स्व

आत्म-अवधारणा सदैव वास्तविकता से मेल नहीं खाती। एक बच्चे के अनुभव, उसके स्वयं के विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं। उदाहरण के लिए, कोई बच्चा किसी कारण से अपना काम पूरा नहीं कर सका, अगले दिन शिक्षक गृहकार्य मांगते समय कह सकता है कि तुम लापरवाह हो। अगले दिन संयोग से माँ या कोई और भी यही बात कहता है। बच्चा अनजाने में इसे स्वीकार कर लेता है और 'मैं लापरवाह हूँ' यह उसके आत्म-वर्णन का हिस्सा बन सकता है। बच्चा एक होशियार बच्चा हो सकता है लेकिन इस तरह की नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने से उसके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है और वह लापरवाह व्यक्ति बन सकता है। इसी तरह, माता-पिता का प्यार सशर्त लग सकता है, उदाहरण के लिए वे अपने बच्चे पर जोर दे सकते हैं कि वह विज्ञान का अध्ययन करे और यदि वह ऐसा करता है तो इससे उन्हें खुशी होगी। बच्चा विज्ञान में अच्छा करने का प्रयास करता है, लेकिन उसे यह पसंद नहीं आता, और वह विज्ञान में अच्छा नहीं है। विज्ञान में अच्छा करने के निरर्थक प्रयास 'मैं



टिप्पणी

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

बुद्धिमान नहीं हूँ' और 'मेरे माता-पिता मुझसे खुश नहीं हैं' जैसा आत्म-वर्णन उत्पन्न होता है। वास्तविक स्व बुद्धिमान था लेकिन विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए मजबूर होने के कारण, आत्म-अवधारणा वास्तविक स्व से दूर एक विकृत आत्म-अवधारणा में चली गई। जब वास्तविक स्व और आदर्श स्व व्यक्ति को अलग-अलग दिशाओं में खींचते हैं तो परिणाम नकारात्मक आत्म-अवधारणा और खराब आत्म-सम्मान होता है। आप कैसे हैं? जरा सोचिए कि आप अलग-अलग विकल्प क्यों चुनते हैं।

यह आत्म वर्णन एकाकी नहीं होता अपितु एक-दूसरे के जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए बच्चा यह विश्वास करता है कि वह दिखने में सुंदर है, वह दूसरों को हंसा सकता है और दूसरे उस पर ध्यान देते हैं और वह अपने माता-पिता के कारण स्मार्ट है।

17.1.2 आत्म-सम्मान और आत्म-प्रभावकारिता

स्वयं के सभी पहलुओं जैसे शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक, आदि के समग्र मूल्यांकन को आत्मसम्मान कहते हैं। आत्म-सम्मान सभी सकारात्मक मूल्यांकनों का योग है। उच्च आत्म-सम्मान वाला व्यक्ति स्वयं को एक अच्छा व्यक्ति समझेगा और उसके अनुसार व्यवहार करेगा। उच्च आत्म-सम्मान के द्वारा सकारात्मक तरीके से व्यवहार करने और नकारात्मक व्यवहार से बचने के अधिक प्रयास हो सकते हैं। (उच्च आत्म-सम्मान हमेशा सकारात्मक व्यवहार की ओर नहीं ले जा सकता)। आत्म-सम्मान और आत्म-अवधारणा बचपन से ही धीरे-धीरे विकसित होती है। परिवार, स्कूल, साथियों और दोस्तों द्वारा बच्चे के साथ जैसा व्यवहार किया जाता है, वह निर्धारित करता है कि उसके विभिन्न पहलू सकारात्मक या नकारात्मक दिशा में विकसित होंगे या नहीं। प्रत्येक व्यक्तियों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों घटक होते हैं, लेकिन समग्र स्व या तो नकारात्मक या सकारात्मक होगा, लेकिन यह सकारात्मकता या नकारात्मकता का अंश भिन्न हो सकता है। यदि बच्चे का आत्म-सम्मान कम या नकारात्मक है तो उसे विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक करने की अपनी क्षमता पर संदेह होने लगेगा।

आत्म-प्रभावकारिता के रूप में एक और संबंधित अवधारणा है। आत्म-प्रभावकारिता किसी व्यक्ति से विभिन्न प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने की उसकी क्षमता की अपेक्षा है। आत्म-प्रभावकारिता किसी व्यक्ति को विभिन्न कार्यों में उसकी सफलता या विफलता की भविष्यवाणी करने में मदद करती है। उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाला व्यक्ति चुनौतियों का सामना करेगा और कुछ चयनित कार्यों के लिए समय और प्रयास करेगा। यह कार्य और उन या उन जैसे समान कार्यों के साथ व्यक्तियों के अनुभवों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, एक लड़की में उच्च आत्म-प्रभावकारिता (आत्म-सम्मान) हो सकती है, लेकिन यदि खाना पकाने का उसका अनुभव खराब रहा है, तो उन कार्यों से संबंधित उसकी आत्म-प्रभावकारिता कम होगी। लेकिन खाना पकाने का सुखद अनुभव रखने वाला लड़का, भले ही आत्म-सम्मान



में कम हो, संबंधित कार्यों पर उच्च आत्म-प्रभावकारिता व्यक्त करेगा। आत्म-प्रभावकारिता का संबंध आत्म-सम्मान से है। आत्म-सम्मान जितना अधिक होगा, आत्म-प्रभावकारिता की संभावना उतनी ही अधिक होगी। हमारे जैसे लोगों के सफल प्रदर्शन का अवलोकन आत्म-प्रभावकारिता के बारे में हमारे विश्वास को बढ़ाता है। कार्यों में निपुणता और माता-पिता एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से वास्तविक प्रशंसा भी आत्म-प्रभावकारिता को बढ़ाती है जबकि तनाव और विफलता इसे कम करती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे सकारात्मक रोल-मॉडल खोजें और तनाव मुक्त रहें। यह तभी संभव है जब वे अपनी जिम्मेदारी लें और अनुशासित रहें।



क्रियाकलाप

नीचे दिए गए स्थान में पाँच सकारात्मक तरीकों से अपना वर्णन कीजिए। इनमें से प्रत्येक गुण के बारे में सोचें और उसके आगे लिखें कि आप ऐसा क्यों सोचते हैं। आपको इसका एहसास किस बात से हुआ?

.....
.....
.....
.....

17.1.3 स्वयं का विकास

स्वयं की अवधारणा बचपन से ही विकसित होती है। जब माता-पिता और देखभाल करने वाले घर का माहौल सुखद बनाते हैं, तो बच्चों में अपने बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। बच्चे स्थितियों में स्वयं का निरीक्षण करते हैं और अपने बारे में राय विकसित करते हैं। न केवल माता-पिता, बल्कि भाई-बहन और दोस्तों की टिप्पणियाँ और राय भी आत्म-अवधारणा को प्रभावित करती है। प्रारंभिक बचपन के दौरान, हमारा स्वयं शारीरिक विशेषताओं के इर्द-गिर्द घूमता है। जैसे-जैसे उम्र के साथ संज्ञानात्मक क्षमताएँ और भावनाएँ विकसित होती हैं, तब बच्चे अपनी तुलना दूसरों से करते हैं। स्वयं की तुलना आत्म-वर्णन में विशेषण जोड़ती है जैसे, 'मैं सीखने में तेज हूँ'। स्कूल में शिक्षकों, सहपाठियों और साथियों द्वारा व्यक्त किए गए कथन और राय भी स्वयं के विकास को प्रभावित करते हैं। बच्चा धीरे-धीरे अपने शारीरिक, शैक्षणिक, भावनात्मक और सामाजिक गुणों के बारे में बहुत सारी अवधारणाएँ विकसित करता है। इनमें से प्रत्येक अवधारणा सकारात्मक या नकारात्मक विशेषणों के साथ होती है। जैसे-जैसे ये आत्म-अवधारणाएँ उभरती हैं, बच्चे में

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

अपने बारे सकारात्मक या नकारात्मक भावनाएँ विकसित होने लगती हैं। समग्र भावनाएँ बच्चे का आत्म-सम्मान हैं।

आत्म-अवधारणा का विकास घर, परिवार, साथियों और पड़ोस में होने वाली सकारात्मक और नकारात्मक बातचीत से प्रभावित होता है। आत्म-अवधारणा के विकास में संस्कृति भी एक महत्वपूर्ण कारक है। बच्चे को होने वाले अनुभव आत्म-अवधारणा की दिशा निर्धारित करते हैं। अगर आप अपने आप को स्मार्ट या अच्छे स्वभाव वाला समझते हैं तो शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके आस-पास के लोग आपसे कहते हैं कि आप स्मार्ट या अच्छे स्वभाव वाले हैं।



क्रियाकलाप

अपने दोस्तों से चर्चा करें कि वे अपने बारे में क्या सोचते हैं। उनसे यह भी सवाल करें कि वे अपने बारे में ऐसा क्यों और कैसे सोचने लगे।



पाठगत प्रश्न 17.1

रिक्त स्थान को उपयुक्त शब्दों से भरिये।

- i. दूसरों के साथ जुड़ने से बच्चे के का विकास होता है।
- ii. स्वयं की ये अवधारणाएँ या तो या होती हैं।
- iii. मूल अवधारणा को कहा जाता है।
- iv. आत्म-सम्मान स्वयं का या के रूप में मूल्यांकन है।
- v. आत्म-प्रभावकारिता से संबंधित है।
- vi. आत्म-अवधारणा का..... से विकास होता है।
- vii. और से फीडबैक आत्म-अवधारणा को निर्धारित करता है।
- viii.सकारात्मक आत्म-अवधारणा के विकास में मदद करता है।
- ix. यहां तक कि आपकी औरआपकी आत्म-अवधारणा को भी प्रभावित करती है।

17.2 व्यक्तित्व

हमने पिछले भाग में स्वयं के बारे में जाना। दूसरों का वर्णन करने के लिए हम अक्सर जिस शब्द का उपयोग करते हैं वह व्यक्तित्व है। यह लैटिन शब्द पर्सोना से लिया गया है जिसका अर्थ है नाट्य प्रदर्शन के दौरान लोगों द्वारा पहना जाने वाला मुखौटा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमारा व्यवहार कोई नाटक है। हर समय कोई नाटक करना आसान नहीं है। वास्तव में, यह उलटा है क्योंकि लोग सुसंगत तरीकों से व्यवहार करते हैं। अगर हम अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग व्यवहार करना चाहें तो भी यह मुश्किल होगा। जब हम किसी के व्यक्तित्व के बारे में बात करते हैं, तो हम उसकी उन दृश्यमान विशेषताओं का उल्लेख कर रहे होते हैं जिनसे या तो हम आकर्षित होते हैं या प्रतिकर्षित होते हैं, अर्थात् वे जिस तरह दिखते हैं। ये व्यक्तित्व के भौतिक पहलू हैं। लेकिन व्यक्तित्व में अन्य पहलू भी शामिल होते हैं।

मनोवैज्ञानिक रूप से, व्यक्तित्व विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने का हमारा अनोखा तरीका होता है, जैसे उत्साहित, हर्षित, गर्मजोशी या मैत्रीपूर्ण आदि। आपने देखा होगा कि कुछ लोग लंबे समय तक कठिन परिस्थितियों से निराश नहीं होते हैं और खुश रहते हैं। ऐसे अन्य लोग भी हैं जो अधिकांश स्थितियों पर गंभीरता से प्रतिक्रिया देते हैं और उन्हें खुश करना आसान नहीं होता है। ये व्यक्तित्व की ऐसी विशेषताएँ हैं जो हर परिस्थिति में स्थिर रहती हैं। हालाँकि लोग कभी-कभी अजीब व्यवहार करते हैं। उस समय को याद करें जब आप कहते थे, 'ओह! उसे क्या हो गया है? वह बहुत अलग व्यवहार कर रहा/ रही है!' शायद ही, कोई व्यक्ति किसी स्थिति पर अपनी सामान्य शैली से बहुत अलग तरीके से प्रतिक्रिया दे सकता हो। हालाँकि, व्यक्तित्व को उन तरीकों के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिनमें लोग अधिकांश स्थितियों में लगातार एक जैसा व्यवहार करते हैं। दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं विशिष्टता और निरंतरता। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुछ स्थितियों में लोग अपने व्यक्तित्व के साथ असंगत व्यवहार करते हैं। लचीलेपन के इस छोटे से अनुपात के कारण ही व्यक्तित्व में परिवर्तन संभव है। यहीं पर मनोवैज्ञानिकों और व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती है। यह व्यक्तित्व की गतिशील प्रकृति है। इस प्रकार, हम किसी व्यक्ति की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के अद्वितीय, सुसंगत और गतिशील संगठन के रूप में उसके व्यक्तित्व की परिभाषा तक पहुंचते हैं।

व्यक्तित्व की विशिष्टता का अर्थ है कि हममें से कोई भी एक जैसा नहीं है। यहां तक कि दो आक्रामक व्यक्ति भी व्यक्तित्व में एक जैसे नहीं होते। हम सभी के बीच व्यक्तिगत मतभेद हैं। प्रत्येक अद्वितीय है। अब आप जानते हैं कि हम सभी अलग हैं। कुछ बहुत भावुक, कुछ आक्रामक और कुछ शांत। यहां तक कि जो लोग अच्छे लगते हैं या प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति भी एक-दूसरे से बहुत भिन्न हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्वों का अध्ययन यह समझने के लिए करते हैं कि हम विभिन्न तरीकों को कैसे विकसित करते हैं, वे विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्वों के व्यवहार की भविष्यवाणी भी करते रहे हैं।



टिप्पणी

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

इस प्रकार, हम लोगों के व्यक्तित्व को जान कर विभिन्न स्थितियों में उनके व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सक्षम हो जाते हैं। व्यक्तित्व का अध्ययन करने का उद्देश्य यह समझना है कि एक निश्चित तरीके से हम व्यक्तित्व को कैसे विकसित करते हैं। कैसे विकसित यह ज्ञान हमें उन अनुभवों की योजना बनाने में मदद करेगा जो सकारात्मक दिशा में बदलाव की सुविधा प्रदान करेंगे। लेकिन याद रखें ये बदलाव लाना आसान नहीं है। अगले भाग में हम विभिन्न सिद्धांतों द्वारा प्रस्तावित व्यक्तित्व के अध्ययन के विभिन्न तरीकों के बारे में जानेंगे।



क्रियाकलाप

अपना और अपने आस-पास के अन्य लोगों का ध्यानपूर्वक अवलोकन कीजिए। अपने व्यवहार की त्रुटियों के प्रकार और उचित व्यवहार को नोट करें। क्या व्यवहार सभी स्थितियों में सुसंगत रहता है?



पाठगत प्रश्न 17.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- i. व्यक्तित्व का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- ii. मनोवैज्ञानिक, व्यक्तित्व का अध्ययन क्यों करते हैं?
- iii. रिक्त स्थान भरिये
 - अ) व्यक्तित्व.....और सुसंगत है।
 - ब) व्यक्तित्व को जानने से हमें योजना बनाने में मदद मिलती है..... व्यक्तियों के लिए अनुभव।

17.3 व्यक्तित्व के सिद्धांत

अब आप व्यक्तित्व का अर्थ और परिभाषा जानते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की व्याख्या कई तरीकों से की है। हम इस अनुभाग में सीखेंगे कि ये दृष्टिकोण या सिद्धांत व्यक्तित्व की व्याख्या कैसे करते हैं। ये सिद्धांत व्यक्तित्व की संरचना, प्रेरणा या ऊर्जा स्रोतों के आंकलन और व्यक्तित्व में अंतर विकसित होने का अध्ययन करने के तरीके सुझाते हैं। यहां व्यक्तित्व के प्रकार, लक्षण, मनोविश्लेषणात्मक, मानवतावादी, अधिगम और सामाजिक-संज्ञानात्मक जैसे पांच सिद्धांतों पर चर्चा की गई है, हालांकि अन्य प्रकार के सिद्धांत भी हैं।

17.3.1 प्रकार सिद्धांत

‘प्रकार उपागम’ ऐतिहासिक है, और यह लोगों को कुछ विशिष्ट व्यवहारों के आधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत करता है। यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने शरीर में तरल पदार्थ की प्रधानता के आधार पर चार प्रकार के लोगों का सुझाव दिया। उनके अनुसार, आशावादी लोगों में प्लीहा द्वारा पित्त का निर्माण होता है। पित्तजन्य चिड़चिड़े या आक्रामक लोगों में काला पित्त होता है, और कफग्रस्त या शांत लोगों में यकृत द्वारा रक्त का उत्पादन होता है, अंत में उदास या अवसादग्रस्त लोगों में फेफड़ों द्वारा कफ का उत्पादन होता है।

क्रेश्चमर काया और चरित्र के अनुसार आधार पर वर्गीकरण का प्रकार होता है। उसके अनुसार व्यक्तित्व के चार प्रकार होते हैं: छोटे और गोल शरीर के साथ पाइक्निक प्रकार, पतले शरीर के साथ एथलेटिक या मजबूत प्रकार, और डायप्लास्टिक या असंगत प्रकार। शैल्डन के अनुसार वर्गीकरण तीन प्रकार का है: नरम, मोटे और गोल शरीर वाले एंडोमोर्फ, लंबे, पतले और सपाट छाती वाले एक्टोमोर्फ, और अच्छी तरह से निर्मित शरीर वाले मेसोमोर्फ।

प्राचीन भारत में भी, सबसे पहले बहुत प्रसिद्ध चिकित्सक चरक ने शरीर के हास्य के आधार पर वात, पित्त और कफ के अनुसार व्यक्तित्व की प्रकृति का सुझाव दिया। हालाँकि ये शुद्ध प्रकार नहीं हैं, विभिन्न संयोजनों में लोगों में त्रिदोष मौजूद होते हैं। तदनुसार, उनमें संयुक्त विशेषताएं हैं। अत्यधिक वात वाले लोग आमतौर पर ऊर्जावान, मांसल, खुले विचारों वाले, सतर्क और आसानी से सीखने वाले होते हैं। अत्यधिक पित्त वाले लोग आम तौर पर बुद्धिमान, तेज-तर्रार, मजबूत शरीर वाले, प्रतिस्पर्धी होते हैं। अत्यधिक कफ वाले लोग आम तौर पर स्थिर, धैर्यवान, विचारशील और सहायक होते हैं।

व्यक्तित्व का एक अन्य उल्लेखनीय सिद्धांत ‘युंग’ का है। युंग के अनुसार दो प्रकार के लोग होते हैं, अंतर्मुखी और बहिर्मुखी। अंतर्मुखी लोग शर्मीले, पीछे हटने वाले, सामाजिक परिस्थितियों में तालमेल बिठाने में असमर्थ होते हैं जबकि बहिर्मुखी स्वभाव के लोग मिलनसार, बातूनी और सामाजिक होते हैं। हालाँकि, हम जानते हैं कि ऐसे कुछ ही लोग हैं जिन्हें उपरोक्त श्रेणियों में से किसी एक में वर्गीकृत किया जा सकता है। दूसरों को एम्बिवर्ट्स कहा जाता है। अगले भाग में हम अपेक्षाकृत अन्य नवीनतम सिद्धांतों का परिचय देंगे।

17.3.2 गुण-लक्षण सिद्धांत

लक्षण लोगों की अवलोकन योग्य व्यवहारिक प्रवृत्तियाँ हैं जो विभिन्न स्थितियों में सुसंगत होती हैं। ये उन विशेषणों की तरह हैं जिनका उपयोग हम लोगों के व्यवहार का वर्णन करने के लिए करते हैं, उदाहरण के लिए, शर्मीलापन, असुरक्षा, मिलनसार, आत्मविश्वास, आक्रामकता आदि जैसे लक्षण। लक्षण अपेक्षाकृत स्थायी और स्थिर होते हैं। व्यक्तित्व का निर्माण अनेक लक्षणों से होता है। ये व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होते हैं। अनेक लक्षण सिद्धांत हैं।



टिप्पणी

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

ऑलपोर्ट और कैटेल के सिद्धांत दो महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। आइए दोनों सिद्धांतों पर नजर डालते हैं।

आलपोर्ट का सिद्धांत

व्यक्तित्व की संरचना और गतिशीलता: यह सिद्धांत दो प्रकार के लक्षणों के बीच भेद करता है— एक जो व्यवहार दिखता है और दूसरा वह, जो अंतर्निहित आंतरिक प्रवृत्तियाँ हैं जो व्यवहार उत्पन्न करती हैं। शर्मीलापन; क्षमता की कमी, आत्मविश्वास और नकारात्मक अपेक्षाओं की अंतर्निहित भावनाओं से आता है। इस प्रकार, सोच, भावना और व्यवहारिक प्रवृत्तियों की आंतरिक प्रक्रियाओं के परिणाम को लक्षण कहते हैं। उसने तीन प्रकार के लक्षणों में भेद किया है। कार्डिनल, केंद्रीय और माध्यमिक। उसके अनुसार मुख्य लक्षण वे हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की परिभाषित विशेषता बन जाते हैं। यानी व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करने वाले। उदाहरण के लिए मेहनती, समय का पाबंद या प्यार करने वाला, मददगार आदि। मदर टेरेसा इतनी दयालु थीं कि उन्होंने अपनी चिंता किए बिना कुष्ठ रोगियों के साथ काम किया। केंद्रीय लक्षण सामान्य लक्षण हैं जो व्यक्ति को परिभाषित करते हैं, लेकिन ये कार्डिनल लक्षणों के रूप में उतने नियंत्रित नहीं होते हैं (केंद्रीय लक्षणों का उदाहरण जोड़ा जा सकता है)। माध्यमिक लक्षण वे हैं जो उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं। ये आकस्मिक पसंद-नापसंद हैं। ऑलपोर्ट के अनुसार, लक्षण महत्वपूर्ण हैं, लेकिन परिस्थितियाँ भी महत्वपूर्ण हैं जो लक्षणों की अभिव्यक्ति को प्रभावित करती हैं। दक्षिण अफ्रीका में एक असामान्य स्थिति का सामना करने से पहले तक गांधीजी दूसरों की तरह ही थे, परंतु उस घटना ने उन्हें एक अहिंसक, निडर नेता बना दिया था।

लोग विभिन्न गतिविधियों में संलग्न रहते हैं जिसमें वे अपनी ऊर्जा उन कार्यों पर खर्च करते हैं जो उन्हें प्रेरित करते हैं। ऊर्जा को उन गतिविधियों में लगाया जाता है जो सफलता की ओर ले जाती हैं और उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के साथ पहचाने जाते हैं और आत्म निर्भर बन जाते हैं। ये गतिविधियाँ प्रेरक बन जाती हैं, ये वे प्रमुख लक्षण किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को नियंत्रित करते हैं। जैसा कि गांधीजी और मदर टेरेसा के उदाहरण के माध्यम से समझाया गया है।

व्यक्तित्व का विकास: जन्म के समय बच्चे में अद्वितीय आनुवंशिक विशेषताएं होती हैं जो धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के लक्षणों में विकसित होती हैं। परिपक्वता, अनुकरण और सिखने से गुणों में अंतर आता है। वे लक्षण प्रमुख हो जाते हैं जो संतुष्टि लाते हैं। ये लक्षण धीरे-धीरे एक सर्वांगसम व्यवहार पैटर्न में बदल जाते हैं जो सभी व्यवहारों के केंद्र में होता है। एक महत्वपूर्ण अवधारणा 'कार्यात्मक स्वायत्तता' की है। ऐसे लक्षण या कार्य प्रवृत्तियाँ किसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए विकसित होती हैं और धीरे-धीरे स्वायत्त हो जाती हैं। वयस्कों के व्यवहार में एकरूपता होती है जो विभिन्न प्रेरणाओं की स्वायत्तता का परिणाम है।

कैटल गुण सिद्धांत

यह सिद्धांत ऑलपोर्ट्स के सिद्धांत से थोड़ा भिन्न है। यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ केंद्रीय गुण होते हैं। लेकिन ये लक्षण अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग मात्रा में मौजूद होते हैं। 16 केंद्रीय लक्षणों को 171 विशेषणों की सूची से पहचाना गया था। एक सांख्यिकीय प्रक्रिया का उपयोग करते हुए, व्यक्तित्व परीक्षण का एक तरीका विकसित किया गया। इस परीक्षण को 16 व्यक्तित्व कारक (16 PF) प्रश्नावली के रूप में जाना जाता है। परीक्षण से 16 लक्षण प्राप्त होते हैं। जो प्राथमिक घटक हैं। इनके अतिरिक्त अन्य लक्षण भी हैं जो इनकी पारस्परिक क्रिया से प्राप्त होते हैं। इन्हें द्वितीयक लक्षण कहते हैं।



टिप्पणी

**पाठगत प्रश्न 17.3**

1. व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।
2. कम से कम चार प्रकार के सिद्धांतों के नाम लिखिए।
3. चरक द्वारा सुझाए गए व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार क्या हैं?
4. ऑलपोर्ट के सिद्धांत में विभिन्न प्रकार के लक्षण क्या हैं?
5. कैटल के व्यक्तित्व सिद्धांत में दो प्रकार के लक्षण कौन से हैं?
6. रिक्त स्थान भरिये
 - i. शेल्डन ने,, और की पहचान की।
 - ii. युंग ने दो महत्वपूर्ण प्रकार के लोगों औरकी पहचान की।
 - iii. कैटल के व्यक्तित्व सिद्धांत पर आधारित व्यक्तित्व परीक्षण को.....
 - iv. ऑलपोर्ट के सिद्धांत में कार्डिनल लक्षण..... व्यक्तित्व की विशेषता हैं।

17.4 मनोवेगीय सिद्धांत

व्यक्तित्व का पहला सिद्धांत सिगमंड फ्रायड नाम के एक चिकित्सक ने विकसित किया था। लकवा, सुन्न होना, बेहोशी, विशेषकर महिलाओं के इलाज के दौरान उन्होंने पाया कि ये मरीज किसी भी शारीरिक समस्या से पीड़ित नहीं थे। उसके अनुसार ये लोग अपनी विभिन्न इच्छाओं और अपेक्षाओं के बीच के आंतरिक संघर्ष से पीड़ित थे। सभी सचेत। मनोगतिक का तात्पर्य विभिन्न दिशाओं में मनोवैज्ञानिक

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

शक्तियों के इस खिंचाव से है, जो मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का कारण बनता है। इस सिद्धांत को निम्नलिखित शीर्षक 'संरचना और विकास' के अंतर्गत वर्णित किया गया है:

17.4.1 व्यक्तित्व की संरचना

इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्तित्व तीन भागों से बना हुआ है: इदं, अहम्, पराहम। इदं में सभी इच्छाएँ शामिल हैं, यानी सभी शारीरिक जरूरतें, यौन इच्छाएँ और आक्रामक आवेग। इदं आनंद सिद्धांत पर काम करती है; यह तुरंत आनंद और आवश्यकताओं की संतुष्टि चाहता है। अहम् वह भाग है जो वास्तविकता के सिद्धांत पर कार्य करता है। यह इदं को नियंत्रण में रखता है और उचित परिस्थितियों में ही आवश्यकताओं की संतुष्टि की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, आपको कक्षा के दौरान भूख लगती है। आपका एक भाग तुरंत भोजन खाना चाहते हैं लेकिन अहम् आपको शिक्षक की सजा की याद दिलाता है और आपको छुट्टी तक इंतजार करवाता है। अहम् इच्छाओं और बाहरी परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाता है। अहम् आंशिक रूप से चेतन है, अहम् के सभी भाग चेतन नहीं हैं। व्यक्तित्व का तीसरा भाग है पराहम। इसका संबंध हमारे कार्यों के नैतिक पहलू से है। जैसा कि इदं कुछ जरूरतों को पूरा करना चाहता है, पराहम शर्तें निर्धारित करता है। यह अहम् से भिन्न है। आइए उदाहरण देखें आप घर पर हैं, आपको पैसा चाहिए, पिताजी की अलमारी में पैसा है। पराहम चेतावनी देता है, किसी सजा के कारण नहीं बल्कि आपके माता-पिता ने बताया है कि बिना अनुमति के पैसे लेना सही नहीं है। पराहम में माता-पिता, स्कूल, शिक्षकों और समाज की सभी शिक्षाएँ शामिल हैं। ये नैतिकताएं सुपरईगो में निहित हैं और हमारे व्यवहार को दिशा देती हैं। हमारे व्यक्तित्व के तीन हिस्सों इदं अहम् और पराहम के बीच चेतन और अचेतन संघर्ष हमारे मानसिक स्वास्थ्य को निर्धारित करता है।

अधिकांश संघर्ष अचेतन होते हैं। चेतना व्यक्तित्व का एक हिस्सा बनती है। चेतन विचार और भावनाएँ व्यक्तित्व का एक बहुत छोटा सा हिस्सा हैं। अचेतन एक अन्य भाग है जिसमें इच्छाओं, यादों और द्वंद्वों का एक बड़ा हिस्सा होता है लेकिन यदि व्यक्ति ध्यान दे तो ये चेतना के लिए उपलब्ध हो जाते हैं। हालाँकि, इनमें से अधिकांश सुसुप्त रहते हैं। मानव व्यक्तित्व का सबसे बड़ा हिस्सा अचेतन है जो खतरनाक इच्छाओं, उद्देश्यों और संघर्षों से बनता है। ये अनुभव एक बार सचेतन थे, लेकिन इन्हें सक्रिय रूप से अचेतन में धकेल दिया गया। यदि ऐसे अनुभव चेतन में आते हैं, तो वे चिंता को जन्म देते हैं, इसलिए ऐसी इच्छाएँ, उद्देश्य और भावनाएँ लगातार व्यक्तित्व के अचेतन भाग में धकेल दी जाती हैं। इदं अहम् और पराहम के बीच निरंतर संघर्ष व्यक्तित्व के विकास को निर्धारित करता है।

17.4.2 व्यक्तित्व का विकास

लोगों को प्रेरित करने वाला मुख्य उद्देश्य लिबिडो या आनंद की तलाश है। ऊर्जा या लिबिडो शरीर के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न चरणों में केंद्रित होती है। विकासात्मक चरणों के दौरान बच्चा शरीर के विभिन्न हिस्सों से आनंद प्राप्त करता है जिन्हें इरोजेनस जोन भी कहा जाता है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है उसे यह भी एहसास होता है कि आनंद की तलाश की कुछ सीमाएँ हैं। विकास का प्रथम चरण मौखिक चरण है।



टिप्पणी

मुख्य अवस्था: इस चरण के दौरान (लगभग पहले 18 महीने) पूरा ध्यान मुँह पर होता है (शिशु का प्राथमिक ध्यान मुँह पर होता है)। बच्चा मुँह के माध्यम से खुशी यानी भोजन और पोषण चाहता है। बच्चा चीजों को चूसता है और चीजों को मुँह में डालता है। यदि किसी कारणवश इस अवस्था में संतुष्टि एवं आनंद की कमी रहती है। यहां व्यक्ति की लिबिडो स्थिर हो जाती है और वह प्यार और पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। यह विषय जीवन भर जारी रह सकता है।

गुदा अवस्था: यह अवस्था (2-3 वर्ष) उस समय के बारे में है जब आनंद की तलाश गुदा क्षेत्र के आसपास केंद्रित (केंद्रित) हो जाती है। बच्चे को माता-पिता द्वारा शौचालय का प्रशिक्षण दिया जाता है। यदि माता-पिता प्रशिक्षण को लेकर बहुत सख्त हैं या बच्चा अनुशासन का विरोध करता है। वह इस स्तर पर स्थिर हो जाती है। ऐसे व्यक्ति का व्यवहार या तो बहुत साफ-सुथरा होने के साथ-साथ बहुत उधम मचाने वाला, जिद्दी या अत्यधिक अनुशासनहीन और उच्छृंखल होता है।

लिंगप्रधान अवस्था: यह अवस्था (लगभग 4-5 वर्ष) जननांगों के आसपास केंद्रित होती है। बच्चे अपनी कामुकता के प्रति जागरूक हो जाते हैं, और वे अपने माता-पिता के बीच घनिष्ठता को समझते हैं। विपरीत लिंग के माता-पिता के प्रति आकर्षण विकसित होता है जिसे ओडिपस कॉम्प्लेक्स कहा जाता है (ओडिपस एक ग्रीक चरित्र था जिसने अपनी मां से शादी करने के लिए अपने पिता को मार डाला था)। जो लोग इस निर्धारण को हल कर सकते हैं और अपने जीवन में समान लिंग के माता-पिता या महत्वपूर्ण अन्य लोगों के दृष्टिकोण, मूल्यों और नैतिकता को विकसित कर सकते हैं, वे स्वस्थ तरीके से विकसित होते हैं। इससे पराहम यानी नैतिक प्रतिबंधों का भी विकास होता है।

अगले दो चरण हैं: अव्यक्तता (7-11 वर्ष) और जननेंद्रिय अवस्था (12 वर्ष से आगे)। अव्यक्तता अवस्था के दौरान बच्चे अपने माता-पिता की नकल करके वांछनीय तरीकों से अपनी लैंगिकता व्यक्त करना सीखते हैं। लैंगिक ऊर्जा को स्कूली शिक्षा, खेल और अन्य प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए रचनात्मक तरीकों से प्रयोग किया जाता है। इस काल में कामुकता दिखाई नहीं देती।

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

जननेन्द्रिय अवस्था कामुकता की परिपक्वता और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीकों के माध्यम से शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप में अभिव्यक्ति है। यौन इच्छाओं की संतुष्टि ही मुख्य लक्ष्य बन जाता है। स्वस्थ विकास करने वाले लोग कड़ी मेहनत करने में सक्षम होंगे, नौकरी और अपने परिवार के साथ भविष्य बनाने की दिशा में काम करने की जिम्मेदारी लेंगे। व्यक्ति का व्यक्तित्व पहले की तरह विकसित होकर अब वयस्क मनोवृत्ति के साथ एकीकृत हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि वे आश्रित होते, तो भी वे मदद के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर होते और कम उद्यम दिखाते हैं जबकि जो स्वतंत्र थे और माता-पिता से पहचाने जाते हैं वे स्व-निर्देशित होंगे।

रक्षात्मक तंत्र

जैसा कि पिछले अनुभाग में बताया गया है कि व्यक्ति के विकास के शुरुआती चरणों के दौरान, कामेच्छा ऊर्जा शरीर के कुछ क्षेत्रों में स्थिर हो जाती है। ऊर्जा की मांग सभी इंद्रियों, अहम् और पराहम द्वारा की जाती है। इसका मतलब है कि इंद्रियों के आवेग जैसे क्रोध, नफरत या अन्य इच्छाएं अभिव्यक्ति की मांग करती हैं। इसी प्रकार, पराहम या माता-पिता (नैतिक) आदेश नियम और अनुशासन भी अभिव्यक्ति चाहते हैं। इनकी विरोधी माँगें चिंता का कारण बनती हैं, हालाँकि इन्हें अहम् द्वारा संतुलित किया जाता है। अहम् खुद को इंद्रियों की माँगों से बचाने के लिए ऊर्जा को सुरक्षित गतिविधियों में बदलने की रणनीति तैयार करता है। व्यक्तियों की इंद्रियों की जरूरतें पूरी नहीं होती हैं, लेकिन अचेतन में इंद्रियों की अवांछित इच्छाओं को छिपाने के लिए ऊर्जा को आंशिक रूप से प्रयोग किया जाता है। बाकी की ऊर्जा को अन्य गतिविधियों की ओर मोड़ दिया जाता है। अहम् द्वारा नियोजित इन रणनीतियों को रक्षात्मक तंत्र कहा जाता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण नीचे दिए गए हैं:

विस्थापन: चिंता पैदा करने वाली इच्छाओं से ध्यान को हटाकर स्वीकार्य गतिविधियों की ओर मोड़ना।

दमन: चिंता उत्पन्न करने वाली स्मृतियों या घटनाओं को बलपूर्वक दबाना। चिंता उत्पन्न करने वाली घटनाओं के अस्तित्व को नकारना-इनकार करना। (चिंता पैदा करने वाली घटनाओं के अस्तित्व को स्वीकार करने से इनकार करना)

प्रक्षेपण: अस्वीकार्य आवेगों को चेतना में प्रवेश से वंचित कर दिया जाता है और दूसरी ओर प्रक्षेपित (विस्थापित) कर दिया जाता है।

युक्तिकरण: चिंता उत्पन्न करने वाले या नकारात्मक अनुभव को स्पष्ट करने के लिए किसी बहाने का उपयोग करना।

प्रतिक्रिया-निर्माण: सामाजिक रूप से अस्वीकार्य अनुभवों को अनजाने में विपरीत प्रकार के व्यवहार में बदल दिया जाता है।

प्रतिगमन: तनावग्रस्त लोग एक बच्चे की तरह व्यवहार करते हैं और विकास के पिछले चरण में वापस आ जाते हैं (वापसी करते हैं)।



पाठगत प्रश्न 17.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- i. मनोवेगीय सिद्धांत सबसे पहले द्वारा विकसित किया गया था।
- ii. मनोवेगीय सिद्धांत में व्यक्तित्व के तीन मुख्य भाग बताए गए हैं,.....और.....
- iii. माता-पिता की शिक्षा एवं संस्कारमें समाहित हैं।
- iv.मुख्य उद्देश्य है जो लोगों को फ्रायड के मनोवेगीय सिद्धांत के अनुसार प्रेरित करता है।
- v. संघर्ष इसलिए होते हैं क्योंकि व्यक्तित्व के तीनों भागनियंत्रित करने का प्रयास करते हैं।
- vi. फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धांत में दिए गए विकास के सभी चरणों की सूची बनाएं।



टिप्पणी

17.5 नव-फ्रायडियन

फ्रायड के अलावा कई अन्य मनोवैज्ञानिक भी थे जिन्होंने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत देने में योगदान दिया। कुछ प्रमुख थे कार्ल युंग , अल्फ्रेड एडलर, एरिक फ्रॉम, करेन हॉर्नी, हैरी स्टैक सुलिवन और एरिक एरिक्सन। फ्रायड ने अचेतन की संकल्पना की जिसमें बचपन की व्यक्तिगत यादें शामिल होती हैं। युंग ने व्यक्तित्व के अचेतन भाग में एक महत्वपूर्ण संकल्प जोड़ी उनके अनुसार, सामूहिक चेतना अचेतन विरासत में मिली है। यह घटक सार्वभौमिक है और सभी व्यक्तियों में मौजूद है। सामूहिक अचेतन 'आर्कटाइप्स' से बना है। आर्कटाइप्स में छवियां और व्यवहार पैटर्न शामिल होते हैं जो मां, भगवान, आध्यात्मिकता, लिंग आदि की अवधारणा से जुड़े होते हैं। ये हमें पूर्वजों से विरासत में मिले हैं। युंग द्वारा प्रस्तावित एक और दिलचस्प अवधारणा 'पर्सोना' या मुखौटा है। यह बाहरी व्यक्तित्व है जिसे व्यक्ति समाज की मांगों के अनुसार अपने व्यवहार को समायोजित करने के लिए अपनाता है। यह सार्वजनिक व्यक्तित्व है जो आंतरिक या निजी व्यक्तित्व से भिन्न है। युंग ने दो प्रमुख व्यक्तित्व अभिविन्यासों, अंतर्मुखता और बहिर्मुखता को भी प्रतिष्ठित किया है। अंतर्मुखी लोग अपने अनुभवों को व्यक्तिपरक दुनिया की ओर अधिक निर्देशित होते हैं, जबकि बहिर्मुखी लोग

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

वस्तुनिष्ठ दुनिया की ओर अधिक निर्देशित होते हैं। इस प्रकार, ये दो प्रकार के व्यक्तित्व अभिविन्यास सभी व्यक्तियों में मौजूद होते हैं लेकिन एक व्यक्ति में एक पहलू हमेशा दूसरे की तुलना में अधिक प्रभावी होता है।

एक अन्य मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतकार अल्फ्रेड एडलर थे। एडलर को श्रेष्ठता के लिए प्रयास करने वाले व्यक्तियों, सामाजिक हित, जीवनशैली और रचनात्मक स्वयं की अवधारणाओं के लिए जाना जाता है। एडलर का मानना था कि सभी व्यक्ति हीनता की भावना से ग्रस्त हैं, परिणामस्वरूप वे श्रेष्ठता के लिए प्रयास करके हीनता को दूर करने का प्रयास करते हैं। उनका यह भी मानना था कि मनुष्य न्याय, सहयोग, सामान्य भलाई और सामाजिक रिश्ते जैसे सामाजिक हितों से प्रेरित होते हैं। जीवनशैली के बारे में उसकी अवधारणा (एडलर जीवनशैली की अपनी अवधारणा को अद्वितीय बताते हैं) व्यक्ति के विकास का अनोखा तरीका है जो उसकी विशिष्ट प्रेरणाएँ और प्रयास के क्षेत्र हैं। एक महत्वपूर्ण अंतर जो उसने दिया वह था किसी की जीवनशैली विकसित करने में प्रशिक्षण और सहायता का महत्व। अपनी रचनात्मक बारे में उसकी अवधारणा आनुवंशिकता और अनुभवों का उत्पाद है, और यह स्वयं की रचनात्मक है जो पूरे व्यक्तित्व को एक दिशा प्रदान करती है। एडलर के योगदान ने पर्यावरण और बाहरी समर्थन को व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण निर्धारकों के रूप में श्रेय दिया।

एरिक फ्रॉम को सामाजिक रिश्तों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है। मनुष्य अकेलेपन से बचने और एक विशिष्ट व्यक्तिगत पहचान हासिल करने की कोशिश करता है। उसका मानना था कि मनुष्य दूसरों के साथ स्वस्थ संबंध विकसित करने की कोशिश करता है लेकिन सामाजिक वातावरण के आधार पर, व्यक्तियों का सामाजिक चरित्र विकसित होता है। एरिकसन ने प्रस्तावित किया कि व्यक्ति विकास के मनो-सामाजिक चरणों के छह चरणों से गुजरता है। विकास के इन चरणों में यदि सफलतापूर्वक महारत हासिल कर ली जाए तो व्यक्ति एक स्वस्थ वयस्क के रूप में बड़ा होता है, अन्यथा पहचान का संकट उत्पन्न हो जाता है। ये चरण, मलमूत्र नियंत्रण, सामाजिक संपर्क जिम्मेदारी, कड़ी मेहनत आदि से सम्बन्धित कौशल है।

17.6 मानवतावादी सिद्धांत

यह सिद्धांत इस तथ्य पर आधारित है कि स्थितियों का व्यक्तिपरक अनुभव वास्तविकता से भिन्न होता है। व्यक्तिपरक अनुभव का मतलब है कि हम किसी स्थिति को कैसे देखते हैं, उदाहरण के लिए पिता बच्चे को शोर मचाने के लिए डांट रहा है, लेकिन बच्चे को लगता है कि परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं करने के कारण वह अभी भी उससे नाराज है। यहां बाहरी स्थिति का तात्पर्य इस तथ्य से है कि बच्चा शोर मचा रहा था और चिल्ला रहा था। बच्चा जो महसूस कर रहा है, वह व्यक्तिपरक वास्तविकता है। हम सभी मानते हैं कि हमारा व्यक्तिपरक अनुभव वास्तविक है। दो मानवतावादी सिद्धांतकारों रोजर्स और मास्लो ने अन्य

मनोविश्लेषकों के विपरीत मनुष्यों की अपनी इच्छानुसार बनने की क्षमता पर ध्यान केन्द्रित किया जो यह मानते हैं व्यक्तिगत विकास बचपन से तय हो जाता है।

व्यक्तिगत मतभेद

17.6.1 रोजर्स का सिद्धांत

इस सिद्धांत की मुख्य धारणा यह है कि सभी व्यवहार वास्तविकता के बजाय वास्तविकता की व्यक्तिपरक धारणा का परिणाम है। इस हकीकत को समझना आसान नहीं है। व्यक्तियों की धारणा सीमित होती है। वे स्थिति के सभी पहलुओं पर कार्रवाई नहीं कर सकते। धारणा और वास्तविकता के बीच हमेशा एक अंतर होता है। सिद्धांत की अन्य महत्वपूर्ण धारणा यह है कि सभी व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार में सक्षम हैं, जिसका अर्थ है किसी व्यक्ति की पूरी क्षमता का एहसास।



टिप्पणी

17.6.2 व्यक्तित्व की संरचना

इस सिद्धांत में कुछ अवधारणाएँ हैं। 'जीव' अनुभव करने वाला प्राणी है। जन्म के समय कोई स्वयं नहीं होता, केवल जीव या बच्चे का अनुभव होता है। जन्म के समय बच्चे का कोई स्वत्व नहीं होता। बढ़ता हुआ बच्चा धीरे-धीरे स्वयं के प्रति सचेत हो जाता है और एक स्व का विकास करता है। धीरे-धीरे आत्म-अवधारणा उभरती है। आत्म-अवधारणा महत्वपूर्ण लोगों द्वारा दी गई प्रतिक्रिया से विकसित होती है। माता-पिता और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति प्यार और देखभाल को सशर्त बनाते हैं। परिणामस्वरूप, यदि बच्चा निर्धारित शर्तों को पूरा करता है तो उसमें सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित होती है। अन्यथा, स्वयं वास्तविक स्व से दूर नकारात्मक दिशा में विकसित होता है। स्वयं और आत्म-अवधारणा इन दोनों शब्दों पर पाठ की शुरुआत में चर्चा की गई थी। यह आत्म-अवधारणा विकास के तरीके को प्रभावित करती है। व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर या अपने जीवन में महत्वपूर्ण लोगों की मांग के अनुसार शआदर्श-स्वयं बनना चाहता है।

व्यक्तित्व का विकास

बढ़ते बच्चे को माता-पिता और अन्य महत्वपूर्ण वयस्कों से देखभाल, प्यार और सम्मान की आवश्यकता होती है। लेकिन माता-पिता का सम्मान या देखभाल उनकी मांगों की पूर्ति पर निर्भर होता है। सशर्त सम्मान उन्हें वास्तविकता से दूर ले जाता है। परिणामस्वरूप, वास्तविक स्व और आदर्श स्व के बीच विसंगति या दूरी उत्पन्न हो जाती है, जिसे व्यक्तित्व में असंगति कहा गया है। जितनी अधिक विसंगति होगी व्यक्ति उतना ही अधिक दुखी होगा। व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है कि वास्तविक स्व और आदर्श स्व के बीच सामंजस्य हो यानी दोनों एक-दूसरे के करीब हों। इसलिए रोजर्स ने बिना अशर्त सकारात्मक आदर (Unconditional Positive Regard) पर जोर दिया, ताकि बच्चा सहज महसूस करे और उसकी ऊर्जा उसकी

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

पसंद की गतिविधियों में लगे। गलत ढंग से समायोजित व्यक्तित्व का उदाहरण वह बच्चा है जिसकी उपलब्धि कम है और माता-पिता उस पर अधिक अंक लाने का दबाव डालते हैं ताकि वह विज्ञान का अध्ययन कर सके। चूँकि बच्चा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा है, इसलिए उसे खेलने या अन्य वह काम करने की अनुमति नहीं है जो वह करना चाहता है। बच्चा असहाय और दुखी महसूस करेगा; इससे उसका आत्म-सम्मान कम हो सकता है।

शुरुआती दौर में परिवार और अन्य महत्वपूर्ण लोगों ने विकास को प्रभावित किया होगा। लेकिन रोजर्स के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति के पास नकारात्मकता और दोष देने की प्रवृत्ति के बजाय सकारात्मकता और विकास को चुनने की इच्छा और स्वतंत्रता है। निम्नलिखित गुण विकास में सहायता करते हैं-

- वर्तमान में चल रहे अनुभव या गुणवत्ता के बारे में तीव्र जागरूकता।
- रक्षात्मक होने के बजाय अनुभवों को स्वीकार करना।
- अंतरात्मा की आवाज सुनना।
- अपनी सफलताओं और असफलताओं की जिम्मेदारी लेना।

17.6.3 अब्राहम मैसलो का व्यक्तित्व सिद्धांत

रोजर्स की तरह ही व्यक्तित्व का यह सिद्धांत भी व्यक्ति की वृद्धि और विकास की प्रबल आवश्यकता में विश्वास करता है। इसका मतलब यह है कि मनुष्य के अंदर अपनी क्षमता को महसूस करने की शक्ति है लेकिन सिद्धांत यह भी प्रस्तावित करता है कि व्यक्ति की बुनियादी जरूरतें पूरी होनी चाहिए। ये हैं भोजन, सुरक्षा, प्यार और आत्मसम्मान की जरूरतें। ये आवश्यकताएँ व्यक्ति के लिए पदानुक्रमिक रूप से महत्वपूर्ण हैं (चित्र 17.1)। इसका मतलब यह है कि अन्य जरूरतों की पूर्ति से पहले तीन बुनियादें जरूरतें पूरी होनी चाहिए।



चित्र 17.1: मासलो का आवश्यकता पदानुक्रम



टिप्पणी

उपरोक्त पिरामिड में सबसे नीचे आधार पर मूलभूत आवश्यकताओं को दर्शाया गया है। ये शारीरिक जरूरतें हैं जैसे हवा, पानी, भोजन, नींद आदि की जरूरत। इन जरूरतों को पूरा किया जाना चाहिए तभी लोग अन्य उच्च क्रम की जरूरतों, सुरक्षा और प्रेम को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं। यदि शारीरिक आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं, तो व्यक्ति अगले स्तर पर नहीं जाएगा, यानी व्यक्ति सुरक्षा के लिए प्रेरित नहीं होगा। इसी प्रकार, जब सुरक्षा जरूरतें पूरी हो जाती हैं तो व्यक्ति प्यार, स्नेह और अपनेपन की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रेरित होगा। जब ये सभी जरूरतें पूरी हो जाती हैं, तो व्यक्ति आत्म-सम्मान और अपनी क्षमता की उपलब्धि की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रेरित हो जाता है। मास्लो के अनुसार, यदि निचले क्रम की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती हैं, तो व्यक्ति असंतुष्ट महसूस करता है। जब बुनियादी जरूरतें पूरी हो जाती हैं तो वृद्धि और विकास के लिए उच्च जरूरतें महसूस होती हैं। वे व्यक्ति जो उच्च क्रम की आवश्यकताओं से प्रेरित होते हैं, जरूरी नहीं कि वे असंतुष्ट हों; बल्कि वे अधिक आत्म-स्वीकार्य हो जाते हैं और सामाजिक आवश्यकताओं को भी स्वीकार करने लगते हैं। ये लोग दैनिक दिनचर्या से ऊपर उठकर हाजिर जवाब और सशक्त होते हैं।



पाठगत प्रश्न 17.5

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
 - i. रोजर्स और मास्लो के सिद्धांत का सामान्य घटक यह है कि मनुष्य वह बन सकते हैं जो वे.....
 - ii. रोजर्स सिद्धांत के दो सबसे महत्वपूर्ण आधार व्यक्ति की व्यक्तिपरक भूमिका औरऔर विकास करना है।
 - iii. रोजर्स के सिद्धांत में व्यक्तित्व की मुख्य संरचनाएँ..... और.....हैं।
 - iv. वही है जो आप बनना चाहते हैं।
 - v.वही है जो आप वास्तव में हैं।
 - vi.आपके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन है।
 - vii. विकास सकारात्मक दिशा में होता है जब..... औरसर्वांगसम हैं।



टिप्पणी

17.7. व्यक्तित्व के अधिगम सिद्धांत

स्किनर अधिगम सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करने वाले प्रमुख सिद्धांतकारों में से एक थे। अधिगम के सिद्धांत में, व्यवहार को उत्तेजना की प्रतिक्रिया के रूप में समझा जाता है। प्रतिक्रिया उत्तेजना से जुड़ी होती है जिसे एस-आर (उद्दीपक - अनुक्रिया) सम्बन्ध के रूप में जाना जाता है। प्रतिक्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं - एक वे जो आनुवंशिक रूप से व्यक्तियों की सजगता में अंतर्निहित होती हैं और दूसरी वे जो विकास के दौरान सीखी जाती हैं। उत्तेजना-प्रतिक्रिया सम्बन्ध की ऐसी कई श्रृंखलाएँ जटिल व्यवहार को जन्म दे सकती हैं। प्रतिक्रिया सीखना दो प्रकार का होता है, पहला है क्रियाप्रसूत अनुक्रिया (क्रियाप्रसूत अनुबंधन) जो एक पुरस्कार की ओर ले जाता है (यह आपने सीखने के अध्याय में पढ़ा होगा)। दूसरा अनुबंधित अनुक्रिया (प्राचीन अनुबंधन) है जो अनुबंधित उद्दीपक द्वारा उत्पन्न होता है। सिद्धांत नीचे वर्णित है-

व्यक्तित्व की संरचना

सीखे हुए व्यवहार से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। सीखे गए व्यवहार वे हैं जिन्हें सुदृढ़ किया जाता है या पुरस्कृत किया जाता है। उद्दीपक - अनुक्रिया संबंध- जिसके बाद पुरस्कार मिलते हैं, मजबूत होते हैं। उदाहरण के लिए, जिस लड़की को उसके खाना पकाने के कौशल के लिए पुरस्कृत किया जाता है या उसकी सराहना की जाती है, उसकी खाना पकाने में दिलचस्पी बढ़ जाएगी। एक और लड़की जिसकी एथलेटिक गतिविधियों के लिए सराहना की जाती है, वह इस प्रकार के कौशल में अधिक से अधिक शामिल होगी। भले ही दो लड़कियाँ किसी विशेष क्षेत्र में प्रशंसा प्राप्त करने के कारण शिक्षा में समान रूप से उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं, उनका व्यक्तित्व उसी के अनुसार आकार लेता है। पुरस्कार पाने की प्रवृत्ति व्यक्ति में बनाई जाती है। इस सिद्धांत में आनुवंशिकी और पर्यावरण की भूमिका प्रमुख है लेकिन व्यक्तियों के अपने आंतरिक विचारों और भावनाओं को कोई महत्व नहीं दिया गया है।

व्यक्तित्व का विकास

नवजात शिशु में केवल वंशानुगत विशेषताएँ, प्राथमिक प्रेरणाएँ और प्रतिवर्ती क्रियाएँ होती हैं। एस-आर सम्बन्ध जो सुदृढीकरण के बाद सीखे जाते हैं। पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया के कारण विभिन्न व्यवहारिक प्रवृत्तियाँ उभरती हैं। शिशु शारीरिक, भावनात्मक और संचार पैटर्न में धीरे-धीरे अंतर करते हैं। सीखना, अनुकरण, परिपक्वता और एकीकरण से लक्षणों में अधिक भिन्नता आती है। किसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए पहले जो कार्य प्रवृत्तियाँ विकसित हुई थीं, वे धीरे-धीरे स्वायत्त हो जाती हैं, अर्थात्, पुरस्कार के अभाव में भी व्यवहार जारी रहता है। विभिन्न उद्दोलनों की यह स्वायत्तता व्यवहार में स्थिरता लाती है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति भूख मिटाने के लिए कोई विशेष भोजन या व्यंजन खा सकता है, लेकिन

बाद में उसका स्वाद और जिन परिस्थितियों में उसे खाया जाता है, वे भी आपस में जुड़ जाते हैं। व्यक्ति को न केवल भूख मिटाने के लिए एक ही व्यंजन खाने के लिए प्रेरित किया जाता है, बल्कि यह समान वातावरण और उत्तेजनाओं की तलाश करने के लिए द्वितीयक प्रेरणा है। इस प्रकार, सीखने का सामाजिक संदर्भ-परिवार की भूमिका, भाषा और प्रारंभिक चरणों में अनुभव किया गया संघर्ष भी व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।

सामाजिक-संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांतकार के रूप में प्रख्यात अल्बर्ट बंदुरा ने सीखने में प्रेक्षण और ध्यान की भूमिका का सुझाव दिया। (आपने पिछले अध्याय में धारणा और ध्यान के बारे में सीखा है)। उन्होंने सीखने में प्रतिमान की भूमिका, हमारी अपनी अनुभूति तथा विचार और सामाजिक संदर्भ पर प्रकाश डाला। उसके अनुसार, लोग दूसरों को देखकर सीखते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप दूसरों को परीक्षा की तैयारी करते देखते हैं, तो आप भी अपनी पढ़ाई और तैयारी के बारे में सोचने लगते हैं। आत्म-प्रभावकारिता की भूमिका या कुछ कार्यों को सफलतापूर्वक करने की अपनी क्षमता के बारे में विश्वास भी सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे छात्र जो मानते हैं कि वे परीक्षा में सफल हो जाएंगे, कड़ी मेहनत करते हैं, जबकि जो सोचते हैं कि वे उत्तीर्ण नहीं होंगे, वे विचलित रहते हैं। तीसरा पहलू जो सामाजिक संदर्भ या पर्यावरणीय समर्थन है, उसे भी महत्वपूर्ण माना जाता है। माता-पिता या शिक्षकों की अपेक्षाएं और समर्थन सीखने और प्रदर्शन को सुविधाजनक बनाते हैं।



टिप्पणी



पाठगत प्रश्न 17.6

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- i. अधिगम के सिद्धांतकारों का मानना है कि सभी व्यवहार
.....और सम्बन्धगठन के कारण होते हैं।
- ii. व्यक्तित्व का समावेश है।
- iii. किसी व्यवहार के अधिगम को द्वारा मजबूत किया जाता है।
- iv. सीखने के अलावा..... और व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं
- v. सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत द्वारा विकसित किया गया था।

17.8 व्यक्तित्व का आकलन



टिप्पणी

मनोवैज्ञानिकों के बारे में आम धारणा यह है कि वे लोगों को देखकर उनके व्यक्तित्व के बारे में बता सकते हैं। लेकिन यह सच नहीं है, मनोवैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ तरीके से व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण, स्व-रिपोर्ट सूची और सर्वेक्षण का उपयोग करते हैं। इन सूची/प्रश्नावली में विभिन्न स्थितियों में किसी व्यक्ति के व्यवहार या लक्षण या गुणों के बारे में कई प्रत्यक्ष प्रश्न शामिल होते हैं। ये परीक्षण वस्तुनिष्ठ माप हैं क्योंकि वे जो अंक प्रदान करते हैं वह विश्वसनीय होते हैं यानी, किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्तांक विभिन्न अवसरों पर समान है। इन परीक्षणों की एक और विशेषता उनकी वैधता है यानी इन परीक्षणों प्राप्तांक परीक्षण के उद्देश्यों का आकलन करते हैं। इस प्रकार, किसी परीक्षण की गुणवत्ता उसकी विश्वसनीयता और वैधता के आधार पर तय की जाती है।

17.8.1 आत्म - प्रतिवेदन आविष्कारिका

ये ऐसे उपाय हैं जिनमें व्यक्ति के निजी गुणों के बारे में प्रश्न शामिल होते हैं जिनका उत्तर व्यक्ति को स्वयं देना होता है। ये प्रश्न विभिन्न स्थितियों में व्यवहार, दृष्टिकोण, विश्वास और भावनाओं से संबंधित होते हैं। परीक्षण लेने वाले व्यक्ति को प्रत्येक प्रश्न का मूल्यांकन करने के लिए कहा जाता है। विभिन्न स्थितियों में आक्रामकता, शर्मिलापन, गंभीरता आदि जैसे लक्षणों पर मूल्यांकन किया जाता है। यदि प्रश्न/पद में उल्लिखित विशेषता या गुणवत्ता उनका वर्णन करती है, तो लोगों को '1 से 5' के मूल्यांकन पैमाने पर उसका उत्तर देना होगा। इन उपायों के साथ समस्या यह है कि लोग अपने निर्णय और अपने बारे में मूल्यांकन में बहुत सटीक नहीं हैं। दूसरी समस्या स्वयं को सकारात्मक प्रकाश में प्रस्तुत करने की सामाजिक वांछनीयता है; इसलिए अधिकतर लोग वांछनीय गुणों के आधार पर स्वयं को उच्च मूल्यांकन देते हैं। कुछ लोगों में खुद को सोचने, तौलने और फिर खुद को सटीक मूल्यांकन देने के बजाय खुद को मध्य श्रेणी में चिह्नित करने की प्रवृत्ति भी होती है।

मानकीकृत आविष्कारिका में प्रमुख हैं मिनिसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व आविष्कारिका (एमएमपीआई) जिसका उपयोग मनोवैज्ञानिक विकारों की पहचान के लिए किया जाता है। 2008 संस्करण का नाम बदलकर एमएमपीआई-2-आरएफ कर दिया गया जिसमें 338 आइटम हैं। डडच-2 नामक पुराने संस्करण में 567 आइटम थे। 10 उप मापक हैं: रोगभ्रम, अवसाद, हिस्टीरिया, पुरुषत्व/स्त्रीत्व, व्यामोह, मनोदुर्बलता, मनोविदलता, अल्पोन्माद, सामाजिक अंतर्मुखता। प्रश्नावली में ऐसे कथन शामिल हैं जो बताते हैं कि क्या लोग जानबूझकर उत्तरों को विकृत कर रहे हैं। परीक्षण का उद्देश्य निदान था, लेकिन व्यापक रूप से इसको व्यक्तित्व सूची के रूप में उपयोग किया जाता है। पिछले पैमाने को भारत सहित दुनिया के कई अलग-अलग हिस्सों में विद्वानों द्वारा अपनाया गया है।



अन्य लोकप्रिय पैमाना कैटेल की 16 पीएफ (व्यक्तित्व कारक) प्रश्नावली है जो भावनात्मक जुड़ाव, भावनात्मक स्थिरता, जीवंतता, सामाजिक रूप से सुरक्षित, सतर्कता, खुलापन, परिवर्तन के लिए खुलापन, पूर्णतावाद, तर्क क्षमता, प्रभुत्व, नियम के प्रति जागरूक, संवेदनशीलता, अमूर्तता, स्वतंत्रता, तनाव अनिश्चितता जैसे व्यक्तित्व गुणों को मापती है। इसका उपयोग बच्चों, किशोरों और वयस्कों के साथ किया जाता है। इसका उपयोग शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और साथ ही नैदानिक निदान से संबंधित परामर्श के लिए व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए किया जाता है।

17.8.2 प्रक्षेपीय परीक्षण

ये मनोवैज्ञानिक परीक्षण हैं जो मनोवेगीय सिद्धांत पर आधारित हैं। ये परीक्षण दूसरों में विचारों और भावनाओं को उत्पन्न करने वाली स्वयं की अस्वीकार्य चिंता, अचेतन प्रक्षेपण की अवधारणा का उपयोग करते हैं। परीक्षण अस्पष्ट या अर्थहीन चित्रों, स्याही के धब्बों और तस्वीरों का उपयोग करते हैं जो लोगों के सामने इस सवाल के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं कि वे उनमें क्या देखते हैं? व्यक्ति के अचेतन विचारों और भावनाओं की पहचान की जाती है उनकी प्रतिक्रियाओं से। सबसे शुरुआती प्रक्षेपीय परीक्षणों में से एक शब्द साहचर्य परीक्षण है, जिसका वर्णन नीचे किया गया है।

शब्द साहचर्य परीक्षण

‘साहचर्य परीक्षण’ शब्द का उपयोग सबसे पहले प्रयोग गैल्टन द्वारा और बाद में युंग द्वारा किया गया। परीक्षण एक नैदानिक निदान उपकरण है, हालांकि इसका उपयोग अन्य प्रक्षेपी तकनीकों के साथ किया जाता है। इसमें व्यक्ति को प्रस्तुत करने के लिए सौ प्रेरक शब्दों का उपयोग किया जाता है और उनसे उनके दिमाग में आने वाले पहले शब्द को यथाशीघ्र कहने के लिए कहा जाता है। ये शब्द तटस्थ हैं। व्यक्ति द्वारा उद्दीपक शब्द के जवाब में शब्द देने में लगा समय नोट किया जाता है। उत्तर रिकॉर्ड किये जाते हैं। ये रिकॉर्ड व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में सुराग प्रदान करते हैं। इसका उपयोग चिकित्सा में प्रगति की पहचान करने के लिए भी किया जाता है। जो अनुक्रिया सामान्य हैं वे ज्ञात हैं, और जो अनुक्रियाएँ इनसे विचलित होती हैं वे समस्या की प्रकृति का संकेत देती हैं। लंबी अनुक्रिया समय, अनुक्रिया के साथ आने वाली भावनाएँ, और अनुक्रिया देने में असमर्थता समस्या और सामान्य अनुक्रियाओं को अवरुद्ध करने के प्रयासों का संकेत देती है।

विषय आत्मबोध परीक्षण

यह एक अन्य प्रक्षेपी तकनीक है। इसे पहली बार 1935 में मरे और मॉर्गन द्वारा विकसित किया गया था। इसमें कार्डों की एक श्रृंखला होती है जिसमें मानव आकृतियों को अलग-अलग सेटिंग्स में अस्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। कुछ कार्डों में केवल एक चित्र होता है, जबकि

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

अन्य में दो या अधिक होते हैं। ये कार्ड एक-एक करके व्यक्ति को दिए जाते हैं। उसे चार प्रश्नों के साथ इन पात्रों से जुड़ी एक कहानी बताने के लिए कहा जाता है: क्या हो रहा है, इस स्थिति का कारण क्या है, ये पात्र क्या सोच रहे हैं और आखिर में क्या होगा। 30 कार्ड हैं, जिनमें से कुछ वयस्क पुरुषों और महिलाओं के लिए उपयुक्त हैं जबकि अन्य लड़कियों और लड़कों के लिए उपयुक्त हैं। परीक्षण बिना किसी व्यवधान के शांत वातावरण में किया जाता है। व्यक्ति को एक-एक करके कार्ड दिखाए जाते हैं। व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर व्यक्तित्व का मूल्यांकन (मूल्यांकन) किया जाता है। व्यक्तित्व का मूल्यांकन (मूल्यांकन) कहानी की सामग्री, लोगों के चरित्र और उनके द्वारा प्रदर्शित भावनाओं पर आधारित होता है। इन कहानियों में संघर्ष और आंतरिक इच्छाएँ और भावनाएँ परिलक्षित होती हैं।



क्रियाकलाप

अपनी पाँच शक्तियों के बारे में सोचें। उन्हें लिख लीजिये। अब अपने परिवार और दोस्तों से पूछें। वे आपकी पांच शक्तियों के बारे में क्या सोचते हैं! क्या वे मेल खाते हैं?



पाठगत प्रश्न 17.7

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

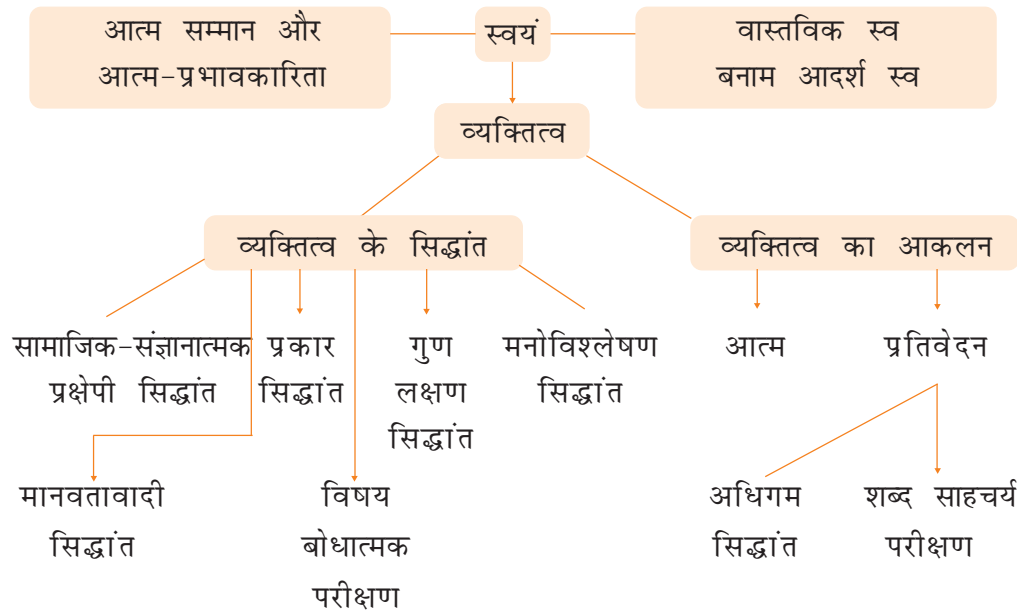
- i. व्यक्तित्व परीक्षण की दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं..... और.....
- ii. आत्म-प्रतिवेदन अविष्कारिक के साथ समस्या और सटीकता का
- iii. स्व-रिपोर्ट अविष्कारिका में स्वयं के बारे मेंशामिल होते हैं
- iv. एमएमपीआई में आइटम और स्केल शामिल हैं।
- v. कैटल के 16 पीएफ (व्यक्तित्व कारक) परीक्षण में 16 शामिल हैं।
- vi. प्रक्षेपीय परीक्षण अचेतन प्रवृत्ति का उपयोग करती है.....अपना अंतरमन, दूसरों पर.....
- vii. शब्द साहचर्य परीक्षण शब्दों की गुणवत्ता के बारे में है.....परीक्षण के दौरान प्रस्तुत किये गये हैं।

viii. विषय आत्मबोध परीक्षण (टी ए टी) चित्र कार्ड के संदर्भ में व्यक्तिगत प्रतिक्रिया का आकलन करता है..और.....

व्यक्तिगत मतभेद



आपने क्या सीखा



टिप्पणी



पाठांत प्रश्न

1. स्व की अवधारणा, आत्म-अवधारणा और इसके विकास की व्याख्या कीजिए।
2. आत्म-सम्मान और आत्म-प्रभावकारिता को परिभाषित करें।
3. व्यक्तित्व की अवधारणा का वर्णन कीजिए।
4. व्यक्तित्व के लक्षण सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।
5. फ्रायड के व्यक्तित्व के सिद्धांत और मूल्यांकन प्रक्रियाओं का वर्णन कीजिए।
6. व्यक्तित्व के दो मानवतावादी सिद्धांतों के नाम बताइए और किसी एक सिद्धांत की व्याख्या कीजिए?
7. अधिगम सिद्धांत में व्यक्तित्व की मूल संरचनात्मक इकाई क्या हैं?
8. सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

9. मूल्यांकन के स्व-रिपोर्ट साधनों की व्याख्या कीजिए।
10. मूल्यांकन के किसी एक प्रक्षेपी परीक्षण का वर्णन कीजिए।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

- i. इंटरैक्शन
- ii. सकारात्मक, नकारात्मक
- iii. आत्म-अवधारणा
- iv. सकारात्मक, नकारात्मक
- v. पहल
- vi. बचपन सातवीं. माता-पिता, भाई-बहन और दोस्त
- vii. सकारात्मक, प्रतिपुष्टि
- viii. शिक्षक और सहपाठी/मित्र

17.2

- i. व्यक्तित्व विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने का हमारा अनोखा तरीका है जैसे, उत्साहित, हर्षित, गर्मजोशीपूर्ण या मैत्रीपूर्ण आदि।
- ii. लोगों के व्यक्तित्व को जानने से हम उनके व्यवहार का अनुमान लगा सकते हैं। व्यक्तित्व को समझने से हमें उसके विकास के बारे में समझ विकसित होगी। यह हमें हमें व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव लाने में भी मदद करेगा ।
- iii. रिक्त स्थान भरें
 - अ) अद्वितीय, लचीला
 - ब) सकारात्मक स्व और व्यक्तित्व

17.3

- i. प्रकार और लक्षण सिद्धांत

- ii. हिप्पोक्रेट्स सिद्धांत, क्लेशचमर का सिद्धांत, चरक का सिद्धांत और जंग का सिद्धांत।
- iii. वात, पित्त और कफ
- iv. कार्डिनल, केंद्रीय और माध्यमिक
- v. **केंद्रीय और माध्यमिक**
- vi. रिक्त स्थान भरें
 - i. एंडोमोर्फ्स, एक्टोमोर्फ्स, मेसोमोर्फ्स
 - ii. अंतर्मुखी, बहिर्मुखी
 - iii. 16 पीएफ
 - iv. परिभाषित

17.4

- i. सिगमंड फ्रायड
- ii. इदं अहम् पराहम
- iii. पराहम
- iv. आनंद की तलाश
- v. लिबिडो या ऊर्जा
- vi. मुखीय, गुदा, लिंग प्रधान, अव्यक्तता, जननेंद्रिय

17.5

- i. चाहत
- ii. अनुभव, इच्छा
- iii. जीव, स्वयं
- iv. आदर्श
- v. वास्तविक
- vi. आत्म सम्मान
- vii. वास्तविक-स्व, आदर्श-स्व



टिप्पणी

व्यक्तिगत मतभेद



टिप्पणी

17.6

- i. उद्दीपक अनुक्रिया
- ii. अधिगम व्यवहार
- iii. पुरस्कार
- iv. आनुवंशिकी और पर्यावरण
- v. अल्बर्ट बंडुरा

17.7

- i. विश्वसनीयता, वैधता
- ii. सामाजिक वांछनीयता, रेटिंग
- iii. गुणात्मकता
- iv. 567, दस,
- v. व्यक्तित्व कारक
- vi. परियोजना, संघर्ष
- vii. प्रत्युत्तर
- viii. कहानी, परिणाम, नायक (कहानी, चरित्र, भावनाएँ)